'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ८७ | वाराणसी, शनिवार, १ अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

गुलमर्ग (कश्मीर) १७-७-'५९

कश्मीर दुनिया को कब रोशन कर पायेगा ?

इस काम के पीछे जो नजरिया है, दृष्टि है, वह यही है हम सबके साथ एक हो जायँ। हम सब घुल-मिलकर रहें, एक-दूसरे को हमदर्दी से देखें और जिंदगी बसर करें। आज तक लोगों के सोचने का जो ढंग था, उसे हम कुछ बदलना चाहते हैं। आज तक हमारे पुरखों ने यही कहा कि पड़ोसी पर प्यार करो, दुखियों की मदद करो। हम भी वैसी ही बात करते हैं। लेकिन हम जो काम करना चाहते हैं, वह एक बुनियादी काम है।

भगवान की दुनिया सबके लिए

आज तक हम अपनी मालकियत कायम रखते थे और थोड़ी-सी मददकर, थोड़ी-सी हमदर्दी दिखाकर तसल्ली पा लेते थे। लेकिन आज हम उसकी बुनियाद में जाना चाहते हैं। आज दुनिया में स्वार्थ का संघर्ष हो रहा है। हरएक ने अपनी अलग-अलग मालकियत रखी है। यह मालकियत जाति के तौर पर ही है, ऐसा नहीं; राष्ट्र भी अपनी-अपनी मालकियत मानते हैं। कहा जाता है कि 'यह राष्ट्र हमारा है। यहाँ आना है तो हमारी इजाजत लेनी पड़ेगी—पासपोर्ट, वीसा लेना होगा।' हिंदुस्तान में एक सूबे से दूसरे सूबे में जाना हो तो पासपोर्ट की जरूरत नहीं होती। लेकिन अगर चीन, बर्मा जाना हो तो वीसा चाहिए। लेकिन ऐसा क्यों? मेरी निगाह में यह बड़ी निकम्मी बात है। भगवान ने दुनिया सबके लिए दी है। वह किसीकी मालकियत नहीं है। 'जापान जापानियों का, हिंदुस्तान हिन्दुस्तानियों का' यह बात अब पुरानी हो गयी है। आज तो 'जापान सबका, पाकिस्तान सबका, इंग्लैण्ड सबका, हिंदुस्तान सबका' ऐसा होना चाहिए। जब तक हम ऐसा नहीं करते, तब तक ये झगड़े किसी न किसी रूप में कायम ही रहेंगे। कभी इस झगड़े का नाम सांप्रदायिक हो या कभी जातीय, पर रूप एक ही होगा। उससे अलग-अलग फिरके पड़ेंगे।

यह इन्सानियत नहीं

यहाँ कश्मीर के चारों ओर—जहाँ सीमा है, जहाँ युद्ध-विराम-पंक्ति है—वहाँ करीब ७०-८० हजार फौजें खड़ी हैं। ऐसी ही फौज पाकिस्तान ने भी खड़ी की होगी। इस युद्ध-विराम-पंक्ति का मानी है—'फायर' के लिए तैयार रहें। इस तरह छोटे-छोटे दिल बनाकर हम एक-दूसरे का डर खरीदते हैं। मजा यह कि इतना खर्च करके भी रूस अमेरिका से डरता है और अमेरिका रूस से डरता है। हिन्दुस्तान पाकिस्तान से डरता है और पाकिस्तान हिन्दुस्तान से डरता है। आज कुल दुनिया में डर छाया है। मैं मानता हूँ कि इतना डर इसके पहले कभी नहीं था। मानो हमारी जिंदगी का यह कायम का स्तम्भ (फीचर) ही बन गया है कि 'शस्त्र तैयार रखो और जिस समय हुक्म हो, उसी समय एकदम फायर कर दो!' देश की हिफाजत के नाम पर हरएक देश आज यही कर रहा है। पाकिस्तान कहता है: "हिन्दुस्तान की नियत कैसी है, क्या मालूम? कहीं वह हमला कर दे तो हम क्या करेंगे? इसलिए हमें तैयार रहना चाहिए।" ठीक यही बात हिन्दुस्तान भी कहता है और डर के कारण यहाँ भी फौजें खड़ी की गयी हैं। लेकिन यह इन्सानियत नहीं है।

यह इन्किलाब का काम

इसलिए हमारा यह जो काम हो रहा है, वह खाली जमीन दिलाने का काम नहीं है। इतना यह महदूद (सीमित) काम नहीं है। आज एक भाई आये थे। कहते थे कि "हमारी जमीन-खेती, घर-द्वार सैलाब में बह गया है। सुना है कि आप जमीन देते हैं। इसलिए हम जमीन माँगने आपके पास आये हैं।" मैंने उनसे कहा: "भाई, हमारे दो हाथ हैं। हम एक हाथ से लेते हैं और दूसरे हाथ से देते हैं। हमें कोई जमीन देगा तो हम आपको अवश्य दे सकेंगे।" लेकिन हमारी यह जो तहरीक है, हमारी जो हलचल चल रही है, सिर्फ इतनी ही नहीं कि गरीबों को कुछ जमीन दे दें और तसल्ली पहुँचा दें। बल्कि यह एक बिलकुल बुनियादी तहरीक है, एक इन्किलाब का काम है।

'हिम्मत' के साथ 'हिकमत' की जरूरी

हमारी समझ में नहीं आता कि क्या वजह है कि पाकिस्तान के लोग खुले आम यहाँ क्यों नहीं आ सकते? मैं यह नहीं

कहना चाहता कि यह खयाली डर है। इसमें भी एक सबब है, लेकिन उस सबब को हमें उखाड़ना होगा।

आज हम करीब ३०० करोड़ रुपया सालाना लश्कर पर खर्च कर रहे हैं। पाकिस्तान १०० करोड़ रुपया खर्च कर रहा है। दोनों मिलाकर ४०० करोड़ रुपये लश्कर पर खर्च हो रहे हैं। यह जो डर के मारे खर्च हो रहा है, वह प्रेम के लिए, प्यार के लिए करें तो कैसा हो? पड़ोसी मुल्क के लिए, राष्ट्र के लिए प्रेम-खाते हम इतना खर्चा कर सके तो कैसा हो? अगर हम इस तरह करें तो क्या बिगड़ेगा, यह हमारी समझ में नहीं आता। लेकिन यह सारा सवाल यहीं रुका है कि शुरुआत कौन करे? एक-दूसरे का एतबार होना चाहिए। एक-दूसरे पर विश्वास होना चाहिए। ऐसे एतबार की हिम्मत हो तो मामला हल हो जाय। एतबार करने के लिए सिफ 'हिम्मत' की ही जरूरत है, ऐसी बात नहीं। उसके लिए 'हिकमत' भी चाहिए।

लेकिन यह बात सबसे पूछनी होगी। मैं कश्मीरवालों को पूछना चाहता हूँ कि यहाँसे अगर यह फौज हटा दी जाय तो क्या तुम लोग हिम्मत हार दोगे? तुम्हारी छाती में, दिल में धड़कन होगी? फौज के भरोसे जो हिम्मत करता है, बहादुरी दिखाता है, वह नाहक है, निकम्मी बात है। इसलिए हर नागरिक को यह हिकमत करनी होगी कि कोई भी और कितना भी बड़ा मसला खड़ा हो तो उसका मुकाबला अदम तशद्दुद (अहिंसा) से किया जायगा।

तीन करने लायक बातें

आज हम सब एक न होने के कारण एक-एक करके लूटे जाते हैं। अगर हम एक होते हैं, गाँव का एक कुनबा बनाते हैं, मालकियत मिटाते हैं तो हमें कोई ठग नहीं सकता, लूट नहीं सकता। फिर अगर हमें कोई मारने आये तो हम उससे सहयोग न करें। याने एक दिन तो हमें मरना है ही, वह टल नहीं सकता, इसलिए हम मर जायँ, पर मारे नहीं। लोग कहते हैं कि यह नामुमकीन है। मैं कहता हूँ कि क्या मनुष्य इतना ऊँचा नहीं उठेगा? जिस जमाने में जमीन का कुत्ता इतना ऊँचा उठता है कि अन्तरिक्ष तक पहुँच जाता है, उस जमाने में मनुष्य के लिए यह नामुमकीन नहीं है। कुत्ता इतना ऊँचा उठेगा, यह पहले किसीने मुमकीन नहीं माना था, वैसे ही मनुष्य के लिए भी आज सोचा जाता है। लेकिन समाज को हमें यह बहादुरी सिखानी ही होगी। तीसरी बात, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक-दूसरे पर एतबार और प्यार करने के लिए तैयारी रखनी होगी।

इस तरह तीन चीजें मैंने आपको बतायीं: (१) अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक-दूसरे पर एतबार रखना। (२) गाँव में एक कुनबा बनाना और (३) सामनेवाले के हमला करने पर भी खुद मर जाना, पर उसे न मारना। ये तीन चीजें हम न कर सकें तो आज की दुनिया के दुःख मिट नहीं सकते। इसलिए हमें इन तीन चीजों को करना ही होगा और इसके लिए लोगों को तालीम देनी ही होगी।

इन्सान इन्सान से इतना क्यों डरे?

हमने देखा—यह पहाड़ चढ़कर और उतरकर हम आये। कोई रास्ता तो नहीं था। एक फुट भी रास्ता नहीं था। लेकिन यहाँ के बाशिंदे पीठ पर सामान का बोझ लादकर इत्ती-सी जगह में हमसे ज्यादा रफ्तार से चले जाते थे। यह क्या है? यह एक शिक्षा ही है। उनके पाँवों को बचपन से यह शिक्षा मिली है। इसलिए उन्हें कोई डर महसूस नहीं होता। मैं सोचता था कि हमारे पाँवों को इतना रास्ता हो तो भी नाकाफी मालूम होता है और हमारे पाँव डगमगाते हैं। लेकिन ये लोग तो बिना डर के चले जाते हैं। यह बचपन की शिक्षा की ही करामात है। ऐसी शिक्षा समाज को देनी होगी। जो हमलावरों के भी बाल-बच्चे होते ही हैं। वे प्यार से वाकिफ है। हम भी प्यार को जाननेवाले हैं। लेकिन अचरज की बात तो यह है कि जंगली जानवर के मुकाबले के लिए मनुष्य को बड़े-बड़े शस्त्रों की जरूरत नहीं पड़ी। बंदूक से ही उसका काम तमाम हो गया। लेकिन इन्सान को इन्सान के डर के लिए भयानक शस्त्रास्त्र ईजाद करने की जरूरत महसूस हुई। कितनी अजीब बात है कि उन्हें अपनी जाति के लिए ही ऐसा काम करना पड़े, जिन्हें बचपन से प्यार की तालीम मिली हो। रूस, चीन, जापान, अमेरिका या कोई भी देश हो, हर देश में इन्सान माँ की गोद में जन्म लेता है और प्यार की तालीम बचपन से पाता है। माँ के जरिये बचपन से प्यार की तालीम पाये हुए हम लोग एक-दूसरे से इतने क्यों डरें? कारण स्पष्ट है कि आज हमारा दिल तंग बन गया है।

'भूदान तहरीक' का मानी क्या?

एक ऑस्ट्रेलियन भाई हमारे पास आये थे। कहने लगे कि 'ऑस्ट्रेलिया के लिए कुछ संदेश, कुछ पैगाम दीजिये।' मैंने कहा: 'किसी देश के लिए ऐसा पैगाम देने की मुझे आदत तो नहीं है। लेकिन खैर! आप पूछते हैं तो मैं कहूँगा कि यह भूदान-तहरीक न महदूद (सीमित) है जमीन तक और न महदूद है हिन्दुस्तान तक। बल्कि यह तहरीक कहती है कि ऑस्ट्रेलिया में जमीन ज्यादा पड़ी है और लोग कम हैं। इसके बावजूद जापान में लोगों की संख्या ज्यादा है और जमीन कम है। लिहाजा ऑस्ट्रेलियावालों को चाहिए कि जापानवालों को बुलायें। आज ऑस्ट्रेलिया में जितने लोग रहते हैं, उससे पाँच-छह गुना अधिक लोग रह सकते हैं। लेकिन आज 'हमारा देश हमारे लिए सुरक्षित है, वहाँ कोई भी नहीं आ सकता' ऐसी भावना सब जगह है। भूदान तहरीक का मानी यही है कि 'ऑस्ट्रेलिया की जमीन जापान के लिए खुल जाय।' जब उसने यह सुना, तो समझ गया कि यह तहरीक क्या है।

यह एक कार्टून: दिमाग बड़ा, दिल छोटा!

हमने कहा कि १० साल में हमने कितनी तरक्की की है। १० साल पहले हम 'जय हिन्द' कहते थे, सो आज 'जय जगत्' कहते हैं। 'जय जगत्' का मानी है कुल दुनिया की जीत हो। हम सब एक दुनिया के बाशिंदे हैं। जब महायुद्ध हुआ था तो आपने देखा कि दोनों बाजू के लोग परमात्मा से दुआ माँगते थे कि 'हमारी फतह हो और दुश्मन खत्म हो।' भगवान बड़े पशोपेश में पड़ गया—'यह कहता है, वह खत्म हो जाय और वह कहता है, यह खत्म हो जाय; अब मुझे क्या करना चाहिए? किसकी प्रार्थना सुननी चाहिए?' मतलब यह कि हम इस तरह एक-दूसरे के खिलाफ भगवान् से प्रार्थना करते आये हैं। लेकिन अब जमाना आया है कि विज्ञान ने देशों के बीच का फासला कम कर दिया है। यह हिमालय कोई लाँघ सकता है, ऐसा खयाल भी कभी किसीने किया था? लेकिन मेरा खयाल है कि रूस के हवाई जहाज १५-२० मिनट में

यहाँ आते होंगे। पामीर के उस पार के जहाज यहाँ इतने जल्दी आ सकते हैं और उसमें किसीको कोई तकलीफ नहीं होती। इस जमाने में देश इतने नजदीक आ गये हैं कि जो जापान और अमेरिका 'सुदूरपूर्व' और 'सुदूर पश्चिम' कहलाते थे, आज वे 'पड़ोसी देश' बन गये हैं। इन दो देशों के बीच सिर्फ १०-१२ हजार मील का लम्बा छोटा-सा समुंदर है और वही उन्हें आपस में जोड़ देता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि आज तुम्हारा दिमाग बहुत बड़ा बना है, बली बन गया है, लेकिन कार्टून जैसा हो गया है। दिमाग बहुत बड़ा है, पर दिल है बहुत छोटा! आज का जो झगड़ा है, वह छोटे दिल और बड़े दिमाग का ही है। पुराने जमाने में दिमाग छोटा था, इसलिए दिल छोटा था तो कोई हर्ज नहीं था। किन्तु आज तो दिमाग बड़ा बन गया है, इसीलिए बड़ा दिमाग और छोटे दिल की टक्कर हो रही है। इसलिए दिल को भी बड़ा बनाना ही होगा। अगर इन्सान ऐसा कर ले तो सारे झगड़े खत्म हो जायँ।

ये तंग दिल और तंग नजरिया!

आज कश्मीर में सैलाब (बाढ़) आया है तो दुनिया भर की मदद आये और मसला हल हो जाय—ऐसा होना चाहिए। लेकिन इसके विपरीत आज तो यहाँ तक होता है कि अमेरिका में भाव कायम रखने के लिए खड़ी फसल जला दी जाती है। अगर अपने पास चारा है तो हम दुनिया को उसे बाँट क्यों न दें? आज रूस में लोगों को तादाद बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उधर चीन और जापान में तादाद ज्यादा है, इसलिए वे लोग तंग आ गये हैं। कुल दुनिया अगर एक है तो ऐसी फिक्र क्यों? रूस में साइबेरिया पड़ा है, उसे आबाद करें। लेकिन दिल तंग हो गया है—नजरिया तंग हो गया है।

विज्ञान का जमाना यह कबूल नहीं कर सकता

विज्ञान के जमाने ने इन्सान के सामने आज यह विकल्प रखा है कि या तो तुम मिट जाओ, फन्ना हो जाओ या एक हो जाओ। यही भूदान तहरीक का मानी है। इसीलिए दुनिया भर के लोग उसे देखने आते हैं। आज ही एक अमेरिकन बहन का पत्र आया है। वह कहती है कि "आप पुरुष हैं, मैं बहन हूँ। आप हिन्दुस्तान के हैं, मैं अमेरिका की हूँ। आप हिन्दू हैं, मैं ईसाई हूँ। लेकिन मैं भगवान का काम करना चाहती हूँ और आप भगवान का काम कर रहे हैं। इसलिए मैं आपके लिए, आपके काम के लिए भगवान से दुआ माँगती हूँ।" अब मैं यहाँ हूँ और वह वहाँ बैठे-बैठे प्रार्थना करेगी। इसलिए स्पष्ट है कि यह तहरीक अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के लिए है, सारे मुल्कों के लिए है। यह पहला ही पत्र नहीं, ऐसे कितने ही पत्र आते रहते हैं।

आज दुनिया को अमन और प्यार की प्यास

भाइयो, दुनिया में आज अमन और प्यार की प्यास है। इसलिए जहाँ कहीं ऐसे काम लगे देखते हैं—जिस काम से अमन और प्यार की आशा, उम्मीद बढ़ती है—वहाँ नजर एकदम चिपक जाती है। शायद कोई ऐसा देश नहीं, जहाँ इस काम की जानकारी नहीं, जिसे यह बात मालूम न हो। मैंने वहाँ जाकर प्रचार नहीं किया है। अभी यहाँ आयी हुई दिल्ली की एक दर्शक जर्मन लड़की हमसे कह रही थी कि इस तहरीक के बारे में उसने जर्मनी में ही सुना है। चारों ओर जब आग हो, वहाँ ठंडक पहुँचानेवाली चीज दिल खींच ही लेती है।

कश्मीर से प्रकाश की किरणें कब?

गांधीजी ने कहा था कि 'कश्मीर से आशा की किरणें दुनिया को मिलेंगी।' हम भी चाहते हैं कि यहाँसे दुनिया को प्रकाश मिले, किरणें मिलें। यहाँ तो घर बैठे गंगा आती है, गंगा तक जाना नहीं पड़ता। याने यहाँ दुनिया भर के दर्शक आते और यहाँ के गुल, पहाड़, पेड़, झरने के गुण अपने यहाँ जाकर गाते हैं। आगे जाकर वे ऐसा कहेंगे कि "वहाँ गुलवाले सिर्फ पेड़ ही नहीं हैं, इन्सान भी गुलवाले हैं—खूबसूरत हैं। जितनी खूबसूरत कुदरत वहाँ है, उतना ही खूबसूरत इन्सान भी है। इन्सानियत भी वहाँ खूबसूरत है।" याने ये सारे दर्शक अपने खर्चे से यहाँ आयेंगे और अपने-अपने देश में जाकर आपका प्रचार करेंगे। मुफ्त में प्रचार हो जायगा। याने आपके हाथ में कुंजी है—दुनिया भर में आपकी कीर्ति पहुँचाने की।

सैलाब से नसीहत

आज यह सैलाब (बाढ़) आपको सिखा रहा है। उसने किसीके खेत या घर की पर्वाह नहीं की। सब हमवार (समान) कर दिया है। सबको बराबर डुबो दिया है। कोई भेद नहीं रखा। अब आप लोग एक-दूसरे को मदद देने का काम करें तो सरकार का काम आसान हो जायगा। जो सबसे अधिक जरूरतमन्द है, उसे ढूँढ़ना होगा। क्योंकि ऐसे लोग सामने नहीं आते, दरख्वास्त लिखवाना भी नहीं जानते। बाबा यहाँ आया है, यह भी वे नहीं जानते। उन्हें ढूँढ़ना होगा। ढूँढ़ने का काम करना होगा। यह सैलाब आपको नसीहत दे रहा है कि हम एक हो जायँ। यह एकता आप कश्मीर में लायेंगे तो घर बैठे गंगा आयेगी, दुनिया में एक इन्किलाब होगा और दुनिया को यहाँसे प्रकाश मिलेगा। ◆◆◆

स्वागत-प्रवचन

बारामूला (कश्मीर) २०-७-'५९

मैं आपके वतन में तब रह जाऊँ.....

[गाँववालों ने विनोबाजी के स्वागत में कश्मीरी तथा फारसी गाने सुनाये। पहला कश्मीरी लोकगीत था, जिसमें कहा कि "आप हमारे मुल्क में आये हैं तो वापस जाने के लिए नहीं, बल्कि यहाँ रहने के लिए आये हैं। हम आप से ताकत और प्रकाश चाहते हैं।" दूसरी फारसी गजल थी, जिसमें कहा था: "तोते को उस्ताद पढ़ाता है। लेकिन जंगल की मैना को मुहब्बत करना किसने सिखाया? मैना की तरह हम भी बिना सिखाये ही मुहब्बत कर रहे हैं। मुहब्बत की दुनिया के बादशाह ने अपना जरीन ताज फकीर के हवाले कर दिया है।"]

प्यारभरे गीत भारत के ओर-छोर तक

अभी आप लोगों ने जैसे दिलकश गाने प्यार से हमें सुनाये, वैसे ही हिन्दुस्तान के बहुत सारे सूबों में हम सुनते आ रहे हैं। बंगाल में इतने गाने सुने कि हमें लगा कि इससे ज्यादा कहीं भी सुनने को नहीं मिलेंगे। लेकिन जब हम उड़ीसा गये तो वहाँ भी लोगों ने प्यार से गाने सुनाये। तब हमें लगा कि बंगाल से उड़ीसा भी कुछ कम नहीं है। फिर हमने दक्षिण के चार सूबों में यात्रा की तो देखा कि हर सूबे में लोगों ने उसी तरह प्यार से गाने सुनाये।

फिर गुजरात, महाराष्ट्र में भी मैंने वही पाया। पंजाब में तो बहनें भी इकट्ठा होकर भजन गाती हैं। गाना, नाचना और प्यार से भगवान का नाम लेना—यह बात कश्मीर से लेकर कन्या-कुमारी तक और द्वारका से लेकर असम तक कुल हिन्दुस्तान में मिलती है।

जहाँ प्यारे दोस्त, वही मेरा वतन

एक गाने में आपने गाया कि 'आप इस वतन में बैठने के लिए आये हैं। आपकी ख्वाहिश हमें अच्छी लगी। अगर हमसे पूछा जाय कि आपका मादरे वतन कौन-सा है तो [मेरी माँ का वतन कौन-सा है, यह तो मैं जानता हूँ, लेकिन अगर मुझसे पूछा जाय तो] मैं कहूँगा कि जहाँ भी प्यारे दोस्त मिलते हैं, वही हमारा वतन है। दुनिया के किसी भी गोशे में जाने पर हम यह महसूस नहीं करते कि हम किसी दूसरे वतन में पहुँच गये हैं। हर जगह हम यही महसूस करते हैं कि यह हमारा ही वतन है। हर जगह हमने ऐसे ही प्यारे दोस्त पाये हैं। ये सियासतदाँ (राजनीतिज्ञ), ये झगड़ा करनेवाले लोग न हों तो दुनिया में प्यार ही प्यार रहेगा। यह ठीक है कि झगड़ा करनेवालों की बात दुनिया में ज्यादा नहीं चलती। फिर भी इन सियासतदाँ लोगों ने दुनिया को इतना तंग किया है कि उनकी करामात से दुनिया बेजार है। वे कृपाकर हट जायँ तो आप देखेंगे कि इन्सान का इन्सान के साथ मेल मिलकर ही रहता है।

इन्सान को प्यार सिखानेवाला

इन्सान को प्यार सिखानेवाला बैठा ही है। उसने प्यार सिखाने की बराबर तजबीज कर रखी है। प्यार सिखाने का काम उसने स्कूलों पर नहीं छोड़ा, हर इन्सान को उसने माँ की गोद से ही सिखला दिया है। जिस दिन बच्चा पैदा होता है, उसी दिन से उसे दूध पिलाया जाता है और प्यार भी। अगर अल्लाह ने प्यार की तालीम हुकूमत पर छोड़ी होती तो करोड़ों की योजना बनानी पड़ती। भगवान ने यह अहम तालीम अपने हाथ में रखी और बच्चे को माँ की गोद में पैदा किया।

माँ को प्यार करना किसने सिखाया? अभी आपने गाना गाया कि 'तोते को तो हम सिखाते हैं, लेकिन मैना को किसने सिखाया?' खैर, 'तोते को हम सिखाते हैं' यह भी एक घमण्ड ही है। हमें भी किसीने सिखाया है, हम सिर्फ बीच में एक जरिया बनते हैं। माँ-बाप बच्चों को पैदा करते हैं, यह मानना भी घमण्ड ही है। उन्हें पैदा करनेवाला दूसरा ही है। ऐसे ही तोते को हम पढ़ाते हैं, यह मानना गलत है। लेकिन घड़ीभर वह मान लें तो भी मैना को, कोयल को कौन सिखाता है? हम सबको प्यार सिखानेवाला बैठा है, यह मान लें तो दुनिया में कोई दंगा, झगड़ा-फसाद नहीं रहेगा।

मालकियत : कुदरत के खिलाफ बगावत

अभी मैं कश्मीर आया हूँ और चाहता हूँ कि आप मेरा जितना फायदा उठाना चाहें, उठा लें। मैं इशारे के तौर पर एक बात कहना चाहता हूँ कि हमने अपनी तरफ से मालिक, मुजारे, बेजमीन यह जो सारा बनाया है, वह अल्लाह ने नहीं बनाया है, वह अल्ला की कुदरत के खिलाफ है। उसने जितनी चीजें बनायी हैं, सबके लिए खोल दी हैं। सूरज की धूप आपको हासिल है, मुझे भी हासिल है। बादशाह को हासिल है और सबको हासिल है। कोई उसका मालिक नहीं है। हवा, पानी, सूरज की रोशनी, आसमान—ये सारी चीजें खुदा ने सबके लिए पैदा की हैं। हमने उनकी मालकियत बनायी, यह एक बहुत बड़ा पाप किया है। अल्लाह की कुदरत के खिलाफ यह हमारी बगावत है। यह बगावत जब तक जारी रहेगी, तब तक हम खुशहाल नहीं रह सकते। अच्छी तरह से जिन्दगी बसर नहीं कर सकते, किसी न किसी प्रकार की तकलीफ लाजिमी ही है।

संकट का सहारा ग्रामदान

आखिर तो हमें जमीन की मालकियत मिटाकर उसे गाँव की बनाना ही है। अगर गाँव-गाँव में ग्रामदान हो और गाँवसभा बने तो ऐसी मुसीबतों के जमाने में गाँवों को बाहर से मदद पहुँचाना भी आसान होगा। बिहार में जब सैलाब आया था तो हम वहाँ घूम रहे थे। हमने देखा कि सरकार मदद पहुँचाना चाहती थी, लेकिन जिन्हें मदद की जरूरत नहीं थी या कम जरूरत थी, उन्हें वह पहले मिल जाती थी और जिन्हें सचमुच जरूरत थी उन्हें वह नहीं मिलती थी। पता ही नहीं चला था कि किसे जरूरत नहीं है, किसे कम है या किसे ज्यादा है। इसलिए मदद का ठीक बँटवारा नहीं हो पाता था। अगर आप जमीन की मालकियत कायम रखेंगे तो वही हाल यहाँ हो सकता है। गाँव में जिसका ज्यादा नुकसान हुआ है, उसे ज्यादा मदद दी जाय, जिसका कम नुकसान हुआ है, उसे कम दी जाय, यह तमीज रखनेवाला आज गाँव में कोई नहीं है। गाँव के मुखिया, नंबरदार गैरजानिबदार बनकर सबको तमीज के साथ मदद तक्सीम नहीं कर सकते। इसलिए ग्रामदान होने पर बाहर से मदद पहुँचाना भी आसान होगा।

आप ग्रामदान पर सोचिये। लेकिन उसकी इफ्तेदाह के तौर पर मुझे भूदान दीजिये। आप चाहते हैं कि मैं आपके वतन में ठहर जाऊँ तो मुझे यहाँ ठीक से बिठाइये। नाश्ता-खाना दीजिये।

मिट्टी मिला दूध बहुत मीठा!

लोरेन के पास एक गाँव में एक नंबरदार के घर में हम रास्ते में ठहरे थे। वह हमारे लिए दूध लाया। किसीने कहा कि बाबा को सिर्फ दूध नहीं भाता। उसने पूछा कि क्या उसमें शक्कर डालूँ? तो हमारे भाई ने कहा कि बाबा को दूध के साथ मिट्टी चाहिए। तब वह भाई समझ गया। उसने चालीस कनाल के दानपत्र के साथ दूध दिया तो वह हमें बहुत मीठा लगा। अगर दूध के साथ मिट्टी न मिलती तो दूध मीठा नहीं लगता।

सारांश, हम सारे हिन्दुस्तान में २५ हजार मील घूमकर यहाँ आये हैं तो आप हमारे पेट के लिए कुछ दें, इससे हमें खुशी नहीं होगी। इसलिए आप अपने-अपने गाँव के बेजमीनों के वास्ते जमीन दीजिये और अपने वतन में हमें बराबर बिठाइये। आपने हमारे लिए कुर्सी रखी है। लेकिन हम कुर्सी पर नहीं, दान में मिली हुई जमीन पर बैठते हैं। ◆◆◆

अनुक्रम

१. कश्मीर दुनिया को कब रोशन कर पायेगा
गुलमर्ग १७ जुलाई '५९ पृष्ठ ५६९
२. मैं आपके वतन में तब रह जाऊँ....
बारामूला (कश्मीर) २० जुलाई '५९" ५७१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी